

अक्षय तृतीया पीछे जन्माष्टमी पहले ग्रहण ग्रस्तास्त होव तो
 दार भोजी उत्थापनमें आरोग्यकी श्रीजमुनाजलमें भिजोष रास-
 नी चंद्रोदय होइ तब दार निकासके भोग धरनी श्रीजमुनाजल-
 वं तुरसी क्यारेमें पधरावरेने

॥ अथ कीर्तनविधि लिख्यते ॥ भादों वद २ श्रीजन्माष्टमी ॥

श्रीमहाप्रभुजी जागे पीछे वधाई गावनी
 राग देवगंधार

आज वन कोऊ हो जि न जाय नेन भर देखो नंदकु-
 मार . आज अति वाढ्यो है अनुराग .

पंचासृतसमें

धनाश्री

Kirtan Vidhi

रानीजू आपुन मिलि मंगल गावे (शृंगार होती समय) अ-
 भंग आपुन मिलि मंगल गावो माई जावो हो सुतनीसेजसो
 हा रानी तेरो रानी विरजीयो गोपाल . फूली फूलीरीजसोहा
 सुवन फूलन फूली वृष भयो महरिके पुत जव वह बाव सुनी
 नंदनंदन वृंदावनचंद आज नंदनूके द्वारे भीर
 (तिलकसमें) आज वधाईरो दिन नीरो

(राजभोग आये पीछे) वधाई माई आज वधाई नंद
 वधाई होजे ग्वालन नंद वधाई बांरत गढे तुम जो मना-
 वत सोई दिन आयो .

(राजभोग दरसन होती समय) एरी ए आज नंद रायके आ-
 नंद भयो सेवे ग्वाल नाचें गोपी गावें आज महा मंगल महराने .
 (भोग संध्या आरतीमें) आज कहाते या गोकुलमें अद्भुत वर्षा आई

हो पद्म धरयो जन ताप निवारन वंद धरन गिरिवर भूप मोहन
 नंद राय कुमार . भादों की रात अंधारी आवे भादों की अंधारी
 अंधारी भादों की रात गोवत गोपी मधु मृदु बानी प्यारे हरिको
 विमल जस गावत गोपांगना यह धन धर्म होते पावो सुनिबड

भाग नि हो नंद रानी आनंद वधावनो नंदम हरिके धाम जागीमू हरी
पुन मुख देख्यो आनंद तूर वजायो रावरके कहें गोप आज ब्रज दूनी
ओप कान देहे सुनो गोकुलमें बाजे मंदिरा ऐसी पूत देखी जाये
श्रवण सुनि सजनी बाजे मंदिरा

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 4
(जागरण भये पीछे जन्म होती विरियां पंचमृत समे) ब्रज भये महीरे
के पूत (महाभाग सराय पीछे) आज नंदरायके आनंद भये-
सवे गवाले गोपी गावे आज मंदमंगल मंदराजे नंदमहोछव
हो वदकी जै पंचमृत पर्यंत रायचने झुलो पालने मेरे विंद अपने वाल
गोपाल हि रानीजू पालने झुलावे हालरो हलरावे माता सांवरो
सुत पलना झुले तुम ब्रजरानीके लाल आज अति बढ्यो है
अनुराग नयनभर देखो नंदकुमार आज वन रोक है जिन जाय
नंद नंदन वंदावन नंद मोद किनोद आज नंद घर आनंद आज नंद-
जुवे द्वार आज नंदजुके द्वारे भीर जाये हो सुतनीको फूली
फूली री जसोदा तेरो रानी विरजीयो यह लाल वधाई माई
आज वधाई पालने झुलो मेरे लाल प्यारे (असीम) रानीजू
विहारो घर सुख कसो वेनि कसी देत असीम धन्य जसोदाभाग
विहारो

(भोग संध्य समे) रानीजू जाये हो मोहन पूत (शयन भोग आ-
ये पीछे) यह धन धर्म हीते पायो गावत गोपी मधु मृदु बानी (श-
यन आरती होती विरियां) आनंद वधावनो नंदम हरिके धाम (मो-
टती समय) रानी जसुमति ग्रह आवत गोपीजन
दूसरे उत्सवकी वधाई (जागते समय) जै जै श्री बल्लभनंदन
मोहन जमि हो बलि गई बलिवलि जाज बलेज कीजे मंगल मंग-
ल (मंगल आरती समे) प्रपटी नागरि रूप निधान (शृंगार होते
अभ्यंग) कुंवरके संग डोलन नंदरानी जन्म लियो वृष भान गोपके
बैठे सब सिद्धासी श्री वृषभान साथजुके आनंद बाजे आज
वधाई (तिलक होती समय) प्रगट भई हो रावल राधा प्रग.)
(राज भोग आये पीछे) वर साने ते दौरि नारि एक नंदभवनमें आई

हो (आरती होतमें) आज वृष भानके आनंद (भोग संध्या आर-
ती समय) प्रगटी नागरि रूपनिधान प्रगट्यो सब ब्रजको शृंगार (श-
यन भोग आये पीछे) आटे भारोंकी उजियारी (शयन आरती होती
विरियां) श्रीवृषभान रायजूके आंगन वाजत आज बधाई (मोदी ती
विरियां) सजनीरी आज गिरिधार दा पायीया धों पेज वनाय-

खल गिरधन संग गधिका सुनी
दान सकादशीकं (मंगला आरती होती विरियां) हमारे दान देउ
गुजरीये (शृंगार होते) दानखीला गोवर्धन गिरि गोखिरेते
मोहन दीनी टेर छवीली नागरी हो रूपकी आगरी हो (राजभोग
आये पीछे) दान धार्य छक आई गोकुलते कांवल भर गुजरीया
वावरी केहु केर गई दान मार कृपावलो कन दान दे (दरसन हो-
तमें) चलने न देत हो यह कटिया (भोग आरती समय) तुमके
जउ बोवा अपने पग कितरो कत ब्रजवधुन काट दान मागत हीमें
आनि कुछ कीयो (शयन भोग आये पीछे) भैया हो चरो चरो ब्रज
नारी दाधि न केचिये हमारे कुल तुमसों (शयन आरती होती)
कापर टोली न चलावत मेरव न की जै पियसो वावरी पौंटे रंगमहल
गोविंद

श्रीवामन द्वादशीकं (मंगला आरती होते) हमारे दान देउ गज
रीये (अभ्यंग होते) कुंवरके संग खेलत नंदराती हमारे गोरस
दान न होइ मोहन लडिलें भोरहीतें काह करत मोसु शृंगारे
(शृंगार) बलि वामन हो जग पावन करन (जन्म समय) प्रगटे
श्रीवामन अवतार (भोग आये पीछे) राजा एक पंडित पौरिति-
हारी (दरसन होते) बलिके द्वारे लड़े मोहनो (भोग संध्या आरती (वामन
समें) अष्टपदी (शयन भोग आये पीछे) दाधि न केचिये ह-
मारे कुल दे हो लाल इंदरिया मेरी (शयन आरती होती)
खिरक दुहाइये आवत ही ब्रजवधु तुंवल मेरो मान राख
आवनको नवल विशोर नवल नागरिया

आम्रन सुद १ कुं (मंगला आरती समय) आवत लखन पिशा रसभीने
 (अभ्यंग होते) कुंवरके संग डोलत नंदरानी ब्रत धर देवी पूजा जावे
 मन अभिलाष न दुखी तव निकुंज देवी (आरसी देखवमें) ले दर्पण
 पिय हि दिखावे (राजभोग आये पीछे) विहारी लाल आई छाक
 स लोनी कृष्णकों जीरी देत ब्रजतारी (आरती होते) बलि बलि
 आज की वा निका लाल (भोगसध्या समे) माई आज मनमोहन
 पिय ठडे सिंहदर लटकत चलत जुवती सुखदानी (रायनभो-
 ग आये पीछे) रानीजू अपने सुतहि जिमावत (पौदती समय)
 पौदे प्यारी राधिकासंग (अमृतजनकमिका)

दशहरा कुं (मंगला आरती समय) गोकुलको कुलदेवता प्यारो
 गिरधर लाल (अभ्यंग होते) कुंवरके संग डोलत नंदरानी (शृं-
 गार होते) गोकुलको कुलदेवता प्यारो गिरधर लाल सात वरसो
 सांवरो बोलत तुतराय बार बार हरि सिखवन लागे पूजा विधि
 गिरि राजकी नंदलाल बतावे (राजभोग समय) हमारो देव गोवर्द्धन
 पर्वत सुनिये तात हमारो मन गोवर्द्धन पूजा कीजै (राजभोग आरती-
 समय) तिरारे स्मिरक कतोई हो कषभान हमारी गैया (भोगके समय)
 आज रघुपति चढे लंक गढ लेनको (जवारा धरते समय) आज
 दशहरा शुभ दिन सीको (भोग आये पीछे) आज पायानको दिन
 नौ (आरती होते) आज रघुपति चढे लंक गढ लेनको (रायन-
 भोग आये पीछे) बाल नंदन वही विकट वनचर (रायन आरती हो-
 ते) सब गोकुलकी जीवन गोपाल लाल प्यारो (पौदती विरिण) स-
 ज नीरी गिरिधर लाल पगिया धरे पेच वनाय पौदे लाल लाडि-
 ली संग ले

शरद पुनम कुं मंगला आरती होते प्यारी ग्रीवां भुज मेल नितन
 पिय सुजान (अभ्यंग समय) कुंवरके संग डोलत नंदरानी (शृंगार
 होते) मान लोम्यो गिरधर गावे नागरी नंद लाल संगरंग भरी राजै
 चलो राधिके सुजान आज नागरी कि सोर भावत विचित्र जोर (राज-
 भोग समय) करत हरि नित नवरंग राधा संग तरणितनया तीर
 लाल गावत वने (राजभोग आरती होते) वन्यो रासमंडल अहो ब्रज-

जुवती जूथ मधिनायक (भोगसमय) रास मंडलमें बने नाचत पियके
 संग पौतम प्यारी (संध्या आरती समय) कृष्ण तरणितनया तीर रास
 मंडलर (राजन भोग आये पीछे) रासमें रसिक मोहन बने भामिन
 मोहनी मदत गुणालकी वांसरी (हल संग रास रंग देव मान रसिक
 खन गिरधर थंग थंग नर्त किए थंग नर्त मान भामिनी गुणाल संग
 सुभग रास आज मोहन रची रासरस मंडली पुरी पुरन मसी पुरी
 है शरदको चंद सुनि धुनि मुरली बन बाजे हरि रास रच्यो नंदनेदन
 आज (अति विराजे राजतंग भोनी भामिनी सांविरी मीतम संग अम्भु-
 त भेष धरे जमुना तट श्याम सुंदर गुणनिधान गिरि कर धर रासरंग
 नाचें खेलत रास रसिक नागर तु गुणाल बोली चले वेग मुगज लो-
 चनी नचवत गिरिराज धरत मुदित रास रंगे शरद सुहाई हो जा-
 मिन भामिन रास रच्यो (आरती समय) श्री कृष्ण मान नंदनी नाचत लो-
 लन गिरि धरन संग (पौदती विरिया) दोऊ मिलकत भावली वतिशं
 रूप चौदस कुं अभ्यंग होय ता समय आज न्हाओ मेरे कुंकर कन्हैया
 मानी काल दिवारी

दीपमालिका (मंगल आरती समय) पूजा विधि गिरि राज की नंदला-
 ल बतारें (अभ्यंग होतें) आज हाऊ मेरे कुंकर कन्हैया मानी को-
 लि दिवारी घरी एक छंडो तात विहार आज अमावस दीपमा-
 लिका वडी पर्वनी है गोपाल आज कुडुकी रात माधो दीपमालि-
 का मंगल चार राजभोग समय हमारे देव गोवर्धन पर्वत गोधन
 जहा सुखारो नंद गोवर्धन पूजो आज गोवर्धन पूजत है ब्रजराज
 आन और आन कहत भज करहत ब्रजनारी नर (आरती होतें)
 वड डेन कुं आगे ले गिरिधर श्री गोवर्धन पूजन आवत (भोग-
 आरती समय) श्याम खिरक के द्वारे करावत गायनको शृंगार (कान
 जगाववे कुं पधारें ता समय) कान जगावत चलेरी कन्हाई (चौक
 में पधार चुके तब) खिरक खिलावत गायेन अंदे खेळी बहो खेळी
 गांग बुलाई धुमारि धोरी दीपदान दे श्याम मनोहर सव गायन के कात
 जगावत (नौ चौकियामे विराजे तब) गाय खिलावत शोभा भारी दि-
 पत दीपमालिका आज देखो इत दीपनकी सुंदराई (आरती होतें)
 दीपदान ब्रजराज देत दोऊ दोहनको गोद वैद्यरी (नौ चौकियासुं

मंदिरमें पधारें तब) सुरभी कान जगाय खिरक कालि मोहन
 बैठे राजत हटरी दीपदान दे हटरी बैठे नवल लाल गोवर्धन धारी
 हटडी बैठे गिरधर लाल आज अमावस दीपमाहिका बड़ी पर्वनी
 है गोपाल आज बुद्धि रति माधा दीपमाहिका मंगल चार मान
 त पर्व दिवारी को सुख दीपदान की होत आरती
 अन्नकूटके दिन (मंगला आरती समय) पूजा विधि गुरु राजकी
 नंदलाल बतावे (शृंगार हात) श्याम खिरकके द्वार करावत गायन-
 को सिंगार खेलन कुंज गंग वलई खेलन कुं भौरी आबुखानी
 नीकी खेली गुपालकी गैया (गोवर्धन पूजाकुं पधारें ता समय)
 गोवर्धन पूजन चलेरी गुपाल (गोवर्धन पूजाके समय) हांडी अ-
 रोगे पीछे वड डेन को आगे ले गिरधर गोवर्धन पूजन आवत
 गोवर्धन पूजा कर गोविंद सब ग्वालन पहरावत खिरक खिलवत
 गायन गढे (पीछे पधारें तब) गोवर्धन पूजाके चर आये गोवर्ध-
 न पूजा गोकुल राव (भोग आये पीछे) गोवर्धन पूजा सवैर समीन
 आन और आन कहत भनकर हत ब्रज नारी नरे अपने अपने
 टोल कहत ब्रजवासिया (पाछे भोग सरे तब) इंद्रकोपके पद
 अवन छांडी चरण कमल महिमा में जानी जू (उत्थापन भोग
 संध्या समे) जय जय लाल गोवर्धन धारी इंद्र मान भोग कीनो हो
 (रायन भोग आवें तब) इन अखियन आगे ते लाल एको पल
 छिन हो उन न्यारे अक्की दूध लई जसोरा मैयाकी जै पागल-
 लारे (रायन आरती होती विरियां) कान्ह कुंवरके करपहुव पर माने
 गोवर्धन पर्वत निर्वे करे मानके पद गावने

भाई दुजको

गोपाष्टमीकुं

अक्षय नौमीकुं

देव प्रबोधनीकुं (मंगला आरती समय) गोविंद तिहारो स्वरूप नि-

गम नेति जेति गोविंद (अख्यान होतें) कर मोरद्वार मारवत मिथी ले संग

जोखति नंदरानी आज गोपाल शृंगार बनाजें नंद भुवनको भुषनमाई

माई आज और कालि और सुमंग शृंगार निरख मोहनको (देव

उठें ता समय) देव दिवारी शुभा राकादशी हरि प्रबोध कीजे हो

आज जागे जगजीवन जग नाथक (राज भोग आये तब) छक्के की
 तीन (राज भोग आरती समें) अरी जाको वेद रहूत ब्रम्हा रत्त (भो-
 ग संध्या समय) अष्टपदी (शयन भोग आये तब) इन आखिजन आ-
 ने ते लाल हँस हँस वृद्ध पीवत नाथ (रत्न आरती समय) मोहन
 मुखार विंद पर मन्मथ को चिक्का गौरी (जागरण समय) पुन धन्यो
 जनताप निवारन मोहन नंद राय कुमार वदे धरन गिरवर भूप मातके
 पद होय महात्मके पद होय मंगल आरती समय मोहन लाल वने
 रंग भीने (श्रीमहाप्रभुजी के अभ्यांग होय ता समय) आपुन मिलि
 मंगल गावे सव समय बधाई होय श्रीगुरुजी की श्रीमहाप्रभु-
 जी की श्रीगुसांईजी की होय मगसर वद ४ तथा मगसर सुद स-
 तमी अष्टमी कुं वधाई गावे श्रीमहाप्रभुजी की श्रीगुसांईजी की
 श्रीगुरुजी की होय सुप्तमी कुं शयन भोग आये पीछे श्रीगोकुल
 नाथजी की कडखा गावे।

मगसर सुदी अष्टमी कुं सात स्वल्प को उत्सव चहुं जुग वेदवचन
 प्रतिपाळे बहु रि कृष्ण फिर गोकुल प्रगटे श्रीविठ्ठल नाथ श्रीगो-
 कुल जुग जुग राज करो श्रीगोकुल घर घर अति आनंद (राज
 भोग समय) सब प्रजहिमें कात विहार सेरकी सुख रास सदा
 श्रीवल्लभ राज कुमार जे वसुदेव किये पूरन तप तेई फल फलित
 श्रीवल्लभ देव (राज भोग आरती समय) विहरत सातों रूप धरें
 (भोग संध्या आरती समय) श्रीविठ्ठल प्रभु नमो नमो श्रीवल्लभ ल-
 लके गुन गाऊं शयन समें श्रीविठ्ठल नाथ वसत जिय जाके (शय-
 न आरती में) प्रगट हू मारग रीति दिखाई पोटवे के तथा माने के
 मगसर सुद ८ मी श्रीगुसांईजी की उत्सव की वधाई बैठें श्रीगु-
 रजी की श्रीमहाप्रभुजी की श्रीगुसांईजी की वधाई गावे।

पौष वद ८ कुं श्रीगुसांईजी को उत्सव (मंगल आरती समय)
 नयन भर देखो नंद कुमार (अभ्यांग होतें) आपुन मिल मंगल गावे
 मिल मंगल गावे साई (शृंगार होतें) ब्रज भये म हरिकें पूत
 आनंद आज नंद बुके द्वार (राज भोग समय) वधाई आज वधाई
 साई वधाई री वाजत आज सुहाई श्रीगोकुल राज के धाम (रा-
 ज भोग आरती होतें) आज वधाई को दिन नीको (भोग संध्या समय)

श्रीविठ्ठल प्रभु नमो नमो (शयन भोग आये पीछे) श्रीवल्लभ लाल के
गुण गाऊं श्रीवल्लभ लाल के हो विहारे चरण कमल शरण (शयन
आरती होते) प्रगट हू माधव रीति दिखाई. पौढवे के माफे पद
होई

पौष वद ११ कूं श्रीगोविंदजी महाराजको उत्सव. वधाई नहीं गावें.
माघ वदी ८ कूं बड़े श्रीराऊजी महाराजको उत्सव. वधाई गावें.
माघ सुदी ५ वसंत पंचमी कूं (मंगल आरती होते) मंगल आरती
गुणालकी (अभ्यंग समय) कुंवर के संग डोलत नंदरानी (शृंगार हो-
ते) तेरो री मोहन अति ही यानो देव अर परी गारी अरी तेरे आ-
नन दग आलस जुत राजत रसमसे जागे होरे न तुम सव नेना अ-
रुण हमारे (राज भोग) खुलें तव अष्टपदी गावें- हरि रिह ब्रज
युवती सरसुंजे ललित लकड़ लता पारि शीलन कोमल मलय समीरे
आयो वसंत वस्तु अनुपकतनु तमारे (भोग आये पीछे) श्रीपंच-
मी परम मंगल दिन मदन महोत्सव आज (आरती होते) श्याम सु-
भग तन शोभित छोटे नीकी लागी चंदन की (भोग संस्था आरती)
गावत चली हैं वसंत वधावन नंदराय दरबार (शयन समे) चल
चल हो वृंदावन वसंत आयो (शयन आरती होते) करारसुं भीजो
कागा भरयो है गुलाल चल चल हो वृंदावन वसंत आ पौढे माई
मदन मोहन श्याम.

माघ सुदी १५ रोपड़ी (अभ्यंग समय) कुंवर के संग डोलत नंद-
रानी (शृंगार होते) धमार गावें श्रीलक्ष्मण कुल गाइये श्रीवल्ल-
भ सुवन सुजान लाल मन मोहना (राज भोग आये पीछे) दोब न-
पति सुन गाइये जाके वसिये गाम लाल बलि सुम काहो (खेल की समे)
हरि रिह ब्रज युवती सरसुंजे नंद सुवन ब्रज भाव ते पाग संग मिल
खेलो नू (भोग आरती समय) (शयन भोग आये) वस्तु वसंत खे लिये
हो आयो पागुन मास (शयन समे) सब ब्रज कुल के राय लाल
मन मोहना. पौढवे समय पौढवे के माफे चल चल हो वृंदावन वसंत
आयो पौढिये लाल लडली संग है.

पागुन वद ७ श्रीनाथजी को पायेत्सव (मंगल आरती होते)

होरी नंदलाल संग खेलेंगी (अभ्यंग होतें) खेलिये लाल सुंदर
 होरी खेलिये (राजभोग आयें) हो हो बोलत जे बोल खेलत होरी
 (खेलकी विरियां) बधाई गावे पीछे धमार पहले अष्टपदी
 धरि धनि मंद ज सो मनी हो धन्य श्री गोकुल गाम लाल रंग
 मगोकी जै (भोग संध्या समय) श्री गोकुल राज कुमार लाल रंग भीने
 हो (शयन भोग आयें पीछे) राय सेकी सकल कुंवर गोकुल के निरु
 से हैं खेलन पाग (पौढती समय) चल चल हो वृंदावन वसंत आयो
 पौढिये छार गिर धर राय

फागुन सुद १० सुं गारी गावे

फागुन सुद ११ कुंज एफादशी कुं (मंगल आरती होतें) होरी नंदलाल
 सुं खेलेंगी (शृंगार होती विरियां) वरमानेकी गोपी मांगन फगुवा
 ओई हो (राजभोगकी विरियां) छारी तें लालनको मन हन्यो श्याम
 रंगीली चुनरी (राजभोग सरे) मदन गोपाल झुलत जेलें आज भाई
 झुलत है नंदलाल मन मोहन अद्भुत जेलेवनी जेल झुलत
 है पिय छारी (भोग संध्या आरती समें) मदन मोहन गहवर वन खे-
 लत सस धमार (राजभोग आयें पीछे) नवल दहाई हो छार
 (शयन आरती होतें) डोल गावे श्री वृंदावनमें कालिंदी के तीर
 डोल चंदनको पौढती विरियां चल चल हो वृंदावन वसंत आयो च-
 ले हो भावते रस एन

फागुन सुद १५ होलीको उत्सव कुं (मंगल आरती होतें) होरी
 नंदलाल सुं खेलेंगी (अभ्यंग होतें) खेलिये सुंदर लाल होरी
 चैन वद १ डोलो उत्सव कुं जागती विरियां श्रीवल्लभ नंदनकी बलि जाऊं
 खिलवन आवेंगी ब्रज नारी गालिन पिछवारे बोल सुनायो (आरती
 होतें) होरी नंदलाल सुं खेलेंगी (अभ्यंग होतें) खेलिये सुंदर लाल
 होरी खेलिये (राजभोग सरे तब) अरी चल छकीली हरि सो
 खेलत जाय (डोल में भोग आयें पीछे) चौध नृपति सुत गाइये
 बसिये जाके गाम लाल बलि झुमकी नंद सुवन ब्रज भावते पाग संग
 मिलि खेलें जू (पहले भोगके दरसन होतें) मदन गोपाल झुलत

डोल झूलत डोल नंद किशोर (दूसरे भोग आये) धमारि बरसानेकी
 गोपी मांगन फगुना आई गोपी हो नंदराय घर मांगन फगुना आई (दु-
 सरे भोगके दर्शन होतें) शोभा सकल शिरोमणी हो दंपति झुलें डोल
 झूलत गुगु रसनीय विरोर (तीसरे भोग) आये पीछे धमार सुर-
 गी होगी खेले सांवरो माधो चांचर खेल हीं अहो पिय लख लखे लोको
 झुमका (तीसरे भोग सुरे) आज लखनालाल पाग खेलत बने मीख
 झूलत सखी नवरंग डोल डोल झूलत लख विहारी डोल झूलत
 ह्रीं प्यारी लख विहारी डोल झूलत हैं प्रिय प्यारी नंदन वृषभान
 दुलारी (छेली आरती भये पीछे) खेल पाग फूल बैठे झूलत डोल
 डहडहे नागर नैन कमल खेलत वसंत वर विडलेरा पीछे (असीस)
 खेल पाग अनुराग बढ्यो जुवती जन देत असीस (डोलमेसू पधारेंतके)
 एक तुक गावनी अनुरागे यागे रससां तव नंदद्वार पै आये नू (भोग
 संध्या आरती समें) खेल पाग फूल बैठे झूलत डोल डहडहे नागर
 नैन कमल (रायत आरती होती विरियां) डोल नंदनको झूलत हल
 धरकीर पौढती समयके मानके पद
 चैन वदी २ द्वितीया पादकूं (मंगल आरती होतें) मंगल आरती गो-
 पालकी (अभ्यंग समय) कुवले सांग डोलत नंदरानी आवे गुपाल
 शृंगार बनाऊं रासिक शिरोमणि नंदलाल रंग भीने हो नंदभवनको
 भूषन भाई आज और कालि और सुभग शृंगार निरख मोहनको
 राज भोग आये पीछे छाकके पद बीडी लख लख रहे श्री राधा
 के भर (राजभोग आरती होतें) कलि कलि आजकी कानि कलाल
 (भोग आरती होतें) यावत निर परबलि २ जाऊं आज बनेरी लख-
 लन गिरिधारी (रायत भोग आये पीछे) व्याखके पद मोहन-
 लाल विचारकी जै (रायत आरती होतें) मौ पै आजकी कानिक
 कहीन जाय पौढती विरियां मानके पद
 चैन सुद १ संव (सरो लखकूं (मंगल आरती होतें) मंगल आरती
 गुपालकी (अभ्यंग समय) कुवले सांग डोलत नंदरानी (शृंगार
 होतें) राजभोग आवे नित्यके पद सोइ (राजभोग आरती होतें)
 कलि कलि आजकी कानि कलाल फूलनकी मंडली मनोहर बैठेजू
 रासिक पिय प्यारी (भोगसंध्या समें) बैठे लख फूलनकी चौरवडी

लखत बलत जुवती सुखदानी (राजन भोग आयें) इन अखियन आगे
ते लख एको पल जिन होउ न्यारे हंस हंस दुध पीवत नाथ रायन आ
रती होतें लखके वदन पर आरती वारें पौढती विरियां मानके पद.

वैशाख सुद ९ श्रीराम नौमीकुं

वैशाख सुद ११ श्रीमहा प्रभु जीके उत्सवकी बधाई करें ता दिन श्रीवकु-
रजीकी श्रीमहा प्रभु जीकी बधाई होइ (मंगल समया जागती विरियां)
श्रीविठ्ठलनाथजीके चरण गारण सोहन जागी हो बल गई कलि वलि
जाखं कलेज कीजे (आरती होतें) आज ग्रह नद महरके बधाई (अ-
भ्यंग होतें) आपुन मिलि मंगल गाके व्रज मयो महरके पुन आज
नंदजुके द्वारे भीर (राज भोग आयें) तुम जो मनावत सोई दिन आयो
बधाई ही वाजत आज सुहाई श्रीगोकुल राजके धाम (राज भोग आ-
रती होतें) आज बधाईको दिन नीको (भोग संध्या समय) भागिन
बल भजत भयो श्रीवल्लभ श्रीवल्लभ गुन गाऊं (रायन भोग
आयें पीछें) श्रीलक्ष्मण गृह महामंगल मयो प्रगटे श्रीवल्लभ पुरन
काम (रायन आरती होतें) प्रगट हो मारग रीति दिखाई पौढती
विरियां मानके पद.

वैशाख सुद १२ अक्षय तृतीया (मंगल आरती होतें) प्रीतम दोऊने
मर गजे वागे (अभ्यंग भंगार होतें) लख आज खेरी शिबिल दे-
खियत और नित्यके पद (चंदन पहरे ता समय) अक्षय तृतीया
अक्षयलीला नवरंग गिरधर पहरत चंदन (उत्सव भोग आयें पीछें)
आज बने नंद नंदरी नव चंदनको तन लेप दियें देख सखी गोवि-
दके चंदन शोभित सांवरे अंग (दर्शन खुले आरती होतें) देखरी देख
रसिक नंद नंदन (भोग संध्या आरती समय) आज बने नंद नंदनरी
नवचंदन अंग अरगला लायें पिछोरा खासको कटि बांधें (रायन-
भोग आयें पीछें) इन अखियन आगे ते लखन पल छिन होउ न्यारे
(रायन भोग आयें) ब्यालके पद (रायन आरती होतें) आजको दिन
धनि २ श्रीमहा प्रभु जीके नंदन पर देखो नंदन नंदन मानके पद
वैशाख सुद १४ श्री श्रीनृसिंह जयतीकुं (मंगल आरती होतें)

आवत ललन पिबा चारस भीने (अभ्यंग होते) कुंवर के संग डोलत नं-
 दरानी (शृंगार होते) बलि बलि पाठ धारिये सुंदर दोर कोन को सुं-
 दर मुद बानी तें मेरी लाज गंवाई जस मातिके दोर माई आज और
 कालि और (राज भोग आयें) पीछें छाक के पद होई (राज भोग
 आरती होते) अरी जाको वर रतन ब्रह्म रतन (भोग संस्था में) अ-
 ष्ट पदी प्रलय पुण्योधि जल मृत (पंचामृत समय) सुहृद माधो
 प्रथम (होयें) पौदती विरिया मान के पद
 ज्येष्ठ वर २ कुं ज्येष्ठ सुद १० गंगा दसमी कुं श्रीगोवर्धन गिरि सध-
 न कंदारें न निवास दिवो पिय प्यारी (शृंगार होते) आगे आगे रथ
 भागी रथजु को गंगा तुव त्रिभुवन जस छुयो तरणितनया तीर आवत
 हो द्रात समय गेदु क खेलत आवंद को कंद वा बारी तेरे या मुख पर
 लाल (राज भोग आयें) छाक के पद कीरी के पद (राज भोग आ-
 रती होते) ओढ़े लाल उपरनी झीनी (भोग संस्था आरती समय)
 अवके पैर लीजे सुधुर रथ कह तान पिछौरा खासा को कटि बांधें
 (शयन भोग आयें) व्यास के पौदवे के मान के पद
 स्नान यात्रा के पद ले दिन (शयन भोग आयें) जल को गई सघट
 नेह भर लाई लगी है चटपटी दरस को आगे चल प्यारी जहा सधन
 नवल कि कुंज भारे पौदे झीनी पटदे ओढ़ स्नान यात्रा के दिन संगल
 आरती होतें तिलक होतें करत गुपाल जमुना जल झीडा (शृंगार
 होते) नमो देवें वसुने कृष्ण मिल नांतराय ज्येष्ठ मास पूर्ण को शु-
 भ दिन करत स्नान गोवर्धन धारी (आरती देखते) ले दर्पण पि-
 य कर पियहि दिखावे (राज भोग आयें) छाक के पद कीरी के
 पद गावें (राज भोग आरती होते) मोहि मिलन भावे बलवीर की
 (भोग संस्था समय) लाल उपरनी ओढ़े झीनी पिछौरा खासा को
 कटि बांधें (शयन भोग आयें) व्यास के पद (शयन आरती होते)
 चारु नट भेष धरे वैदे गोविंद जहा सधन गहूर वन निकुंज भवने
 पौदते समय मान के पद
 रथ यात्रा कुं (संगल आरती समय) झूमक सारी होत न गोरें
 (अभ्यंग समय) कुंवर के संग डोलत नंदरानी (शृंगार होते) देखो
 सखी नंद नंदन मदगत राज की सो बाल ले दर्पण पिय कराहि दि-

खावे (राज भोग सरे) रथमें विराजे (राम मखार) कुंवर चलो हो
 आगे नू गहवर जहां बोलत मधुरे वन तुवचल नंदनदन वन बोली
 (रथके दर्शन होतें) तुम देखो माई रथ बैठे गिरधारी (दूसरे भोग
 आवे तब) लारी नगा मंदलाल कुंवर मोरन संग नाचे इतु मोरन की
 भांति देख नाचे गोपाल (दूसरे भोग देखे दर्शन होतें) तुम देखो माई
 हरि जुके रथकी गोमा (तीसरे भोग आवे तब) वृंदावन कनक भूमि
 नितीत ब्रज नृपति कुंवर पावसनट नरुगे अखारी वृंदावन गावत रसि-
 कराय ब्रज नृपति कुंवर गोवर्धन पवत ऊपर परम मुदिन बालन है मोर
 वृंदावन भुव कुमुदा दिक् युत मंदानल स निरे (रथके दर्शन होतें) ज-
 य श्री जगन्नाथ हरि देवा (रथमें आरती भये पीछे) वह पट पीतकी
 पहरण (संध्या आरती भोग समे) गावत रसिक राय ब्रज नृपति कुंवर
 लडलो लडाय वृंदावन धेनु (रायन भोग आये) मलारमें गावने न्या-
 र कीजिये घनश्याम कोऊ माई ले होरी गोपाल हि (रायन आरती
 होतें) राग अजानो सुंदर वदनरी सुरवसरन श्यामको निरख नेन
 मन थाक्यो (मानके पर) तू चलि नंदनदन वन बोली पौंदे कुंजम-
 हल गोविंद (श्री Tatji Maharaj Ki Pustak)
 षष्ठ पिंडरुके दिन (मंगला आरती समय) लाल माई बांधे कू सुमी
 पाग (सृंगार होतें) लाल माई लागत आज सुहाये देखो माई सुंदर-
 ताको सागर कोऊ माई तिहारे गोपाल हि (आरती देखतें) लाल
 मेरी सुरंग नूनरी देहो (राज भोग आये पीछे) मलारमें भोजनके पद
 यह तो भाग पुरुष मेरी माई भोजन करत हैं गोपाल कृष्णको
 नीरी देह ब्रजनारी (राज भोग आरती होतें) ब्रज परतीकी आज
 घटा (भोग संध्या आरती समय) इन मोरनकी बलिहारी गाय सब
 गोवर्धनते आई (रायन भोग आये पीछे) लाल भीजत आये मेरे
 गृह सुखीरी मोही बूद अनानक लागी (रायन आरती होतें) गावत
 रसिक राय ब्रज नृपति कुंवर मानके पद माननकीजे माननी करण
 वस्तु आईरी पौंदे सचिका उर लाय
 श्रावण वदी में हिंडोर (मंगला आरती समय) तू चल नंदनदन

वन बोलीं (अभ्यंग समय) कुंवरके संग डोलत नंदरानी सरवीरी आ-
ज शोभा देख वनकी देखो माई सुंदरताको सागर आई जू श्याम
जलद घय चहुं दिसते घनघोर (राजभोग आये) जेवत नंद कान्
इ कयेरे आज देख मोन मदन गुपाल (राजभोग आरती होते) आ-
वण दू लह आये सांझ कुंजगमोहनमें गावें हिंडोरना हो रोख्यो नंद
अवास टुकुराजीके संनिधान झूलते समय राग मलार झूलन
आई ब्रजगरी गिरधर दाल जूके संग हिंडोरना झूलत रंग हिं-
डोरें राधा मोहन तेसो सी वृंदावन तेसी यह रित भूमि तेसी यह वीर
वधू रंग मन्थो सिंहद्वार रायन भोग आये हिंडोरें माई झूलनके
दिन आये (रायन आरती होते) वृंदावन झूलत गिरधर धारी
(मानके पद) तू चल नंदनंदन वन बोली न्हेंनी न्हेंनी वृंदन हो पि-
य वसे सधन घय घनघोर

Kirtan Vidhi

श्रावण वदी - सुं ब धाई बैठें सवेरके समय बधाई गावे
श्रावण सुद ३ टुकुराजी तीज (मंगल आरती समें) (राग मलार)
बोले माई गोवर्धन पै मुरवा (अभ्यंग होते) कुंवरके संग डोलत नं-
दरानी (शृंगार होते) ब्रज भयो महारिकें पूज आज नंदजुके दोरें
भीर (राजभोग आये पीछे) देखो अदभुत अव गति की गति
कैसो रूप धन्यो हे हो (राजभोगके दरिन होते) धन्य जमोदा
भाग तिहारो जिन ऐसो सुत जाये हो (सांझकुं) राधे जू दे-
खिये वन शोभा राग मलार आखीरी सांवन तीज मुहाग हिंडो-
रना झूलन आई नई ऋतु श्रावन तीज मुहाई एरी हिंडोरना
झूलन आई बोली हें श्याम मुहाई नवल लालके संग झूलन आई
हे हिंडोरें (रायनभोग आये) राग विहागरो झूलत नवल किशोरी
लालन एरी हिंडोरना (रायन आरती होते) लाल मुनिनके मुंडन
झूलन आई हिंडोरें राग मलार मानन कीजै माननी वरषा ऋतु
आई पौढिय प्यार गिरधरराज

श्रावण सुद ११ पवित्रा लका वसो कुंज (मंगल आरती होते)

नयन भर देखो नंद कुमार (शृंगार होते) ब्रज भयो महारिकें पूज

(राजभोग आये पीछे) वधाई री आज सुहाई श्री गोकुल राजके धाम
 तुम जो सतावत सोई दिन आयो (राजभोग आरती होतें) एरो रो
 आज नंद रायके आनंद भयो (पवित्राके समय) पवित्रा पहरत
 राजकुमार (वहु बंदी झुलवे) ता समय जंग मोहनमें रागभोरठ
 सुरंग हिंडोरना रंग भूमि नृप वजरायको (हिंडोरके दर्शन होतें)
 राग विहागरो लाल मुनिनके झुंडन झुलन आई हो हिंडोरें सुरंग
 हिंडोरें झुलें झुलत दोम लालन गिरिधर धारी नवल लालके झुं
 डन झुलन आई हो हिंडोरें (रायन भोग आयें) राग मलार को
 वादर ओलहरि आये तामाधि झुलत रंग हिंडोरें ओलहरि आई
 हो घनघटा हिंडोरें व झुलत हैं श्यामा श्याम (रायन आरती
 होतें) राधाजू झुलत रमेक रमक मानके पद राग मलार सखी-
 री आज देख रोमा वनकी राग विहागरो पौढवेमें पौढे झीनो
 पट दे ओट

श्रावण सुद १५ राखी पुनम (मंगल आरती होतें) आज वन को
 ऊ हो जि न जाये (अभ्यंग होतें) आपुन मिलि मंगल गावे मि-
 लि मंगल गावे मंडी व्रज भयो महारिके पूव आनंद आज नंदजू-
 के द्वार (राजभोग आये पीछे) राग आसावरी सुंदर व्रजकी बा
 ला जुरी बली हें वधावन नंद महारिके द्वार (राजभोग आरती
 होतें) राग सारंग सब ग्वालन नाचे गोपी गावें (राखी बांधें
 ता समय) राग सारंग वहति सहोद्रा राखी बांधति (सांझ कूंज-
 ग मोहनमें) झुलो झुलो हो मन भावन (दरसन होतें) राग अडा-
 नो श्रावनकी पुत्थो मन भावन हरि आये घरे झुलोगी पचरंग डो-
 री बांध हिंडोरें पावस ऋतु आनंद भर झुली झुली हो पियसंग
 (रायन भोग आये पीछे) राग विहागरो झुलत गिरिधर लाल लाल
 मुनिनके झुंडन झुलन आई हो हिंडोरें (माने) तू चल नंदनेशन
 वन बोली पौढे कुंज पहल गा विद ॥

इति श्री नवनीत त्रिपत्नीके घरके उत्सवनकी कीर्तनविधिः संपूर्णः